ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-6* July - 2017
Innovation The Research Concept

सांगीतिक अवयवों द्वारा रसोत्पत्ति

सारांश

इन्द्रियों से हम जो कुछ अनुभव करते है उसका प्रभाव हमारे मन पर पड़ता रहता है। अनुभव क्षणिक होते है, परन्तु उसका प्रभाव या संस्कार हमारे मन पर सर्वदा के लिए अंकित हो जाता है। रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, घृणा आदि भाव या संस्कार हमारे मानस पटल पर अनुभव परम्परा के प्रभाव रूप में अंकित है। जब कोई घटना या व्यहार हमारे साथ होता है, तो ये संस्कार क्रियाशील हो जाते है, इन घटनाओं या व्यहार से हम जो आनन्द, सुख–दुख, हर्ष का अनुभव करते है, वही रस है। संगीत में प्रयुक्त स्वर व ताल के द्वारा रस की अनुभूति होती है। सर्वप्रथम **भरत मुनि** ने नाट्यशास्त्र में सांगीतिक स्वरों द्वारा रसोंत्पत्ति का वर्णन किया है।स्वर जब विभिन्न संदर्भो में, विभिन्न अन्तरालों के साथ नियमों के अन्तर्गत राग रूप में होता है, तब स्वरों द्वारा रसोत्पत्ति होती है।

प्रतिमा गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर,
संगीत गायन विभाग,
डॉ0 भीमराव अम्बेडकर
राजकीय महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
फतेहपुर

मुख्य शब्द : संगीत, तैत्तिशयोपनिषद, नाट्यशास्त्र, रस

प्रस्तावना

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक रस शब्द का प्रयोग भिन्न–भिन्न अर्थो में किया जाता है, परन्तु इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम वेदों में किया गया है। साहित्य के क्षेत्र में रस की कल्पना **तैत्तिशयोपनिषद** के आधार पर की गई है, इसमें ब्रह्म को ही रस रूप माना गया है, यहीं वास्तविक आनन्द है, क्योंकि अनादि काल से ही जन्म–मृत्यु,सुख–दुख का अनुभव करने वाली यह जीवात्मा इस रसमय ब्रह्म को ही पाकर आंनदित होती है। आयुर्वेद तथा चिकित्सा शास्त्र में यह प्राणदायिनी मानी गयी है। इस प्रकार से रस भौतिक रूपइन्द्रिय विशेषजन्य आस्वाद का बोधक है, अतः ललित कला का मुख्य श्रृंगार रसानुभुति है।

संगीत में प्रयुक्त स्वर व ताल के द्वारा रस की अनुभूति होती है। रस का महत्व साहित्यशास्त्र व संगीतशास्त्र में समान है, रसहीन गायन को नीरस व रसयुक्त गायन को सरस कहा जाता है।

सर्वप्रथम **भरत मुनि** ने भी नाट्यशास्त्र में सांगीतिक स्वरों के सम्यक प्रयोग का विधान उन्होंने निम्न शब्दों में किया है–

'तत्र सप्त स्वरः षड्जर्षभगान्धार मध्यमपंचम धैवत निषादः एते रसेषूपपसद्याः'

''हास्य शृगारयोः कार्यो स्वरौमध्यमपंचमौ
षड्जर्षभौ च कर्तव्यौ वीररौर्दद्भुतेष्वथ
गान्धारश्च निषादश्च कर्तव्यौ करूणे रसे
धैवतश्च कर्तव्यौ वीभत्से सभयानके''।

अर्थात् 'हास्य तथा श्रृंगार में मध्यम एवं पंचम का प्रयोग उचित माना गया है, वीर, रौद्र तथा अद्भूत में षड्ज एवं ऋषभ स्वर का करूण रस में निषाद का तथा वीभत्स एवं भयानक रस में धैवत स्वर का प्रयोग अभीष्ट है।' जिन रागों में जिस स्वरों की प्रधानता होती है। उनसे उस रस की निष्पत्ति होती है।

भरत के पश्चात् के अन्य संगीतशास्त्रियों ने भी रस और राग के सम्बन्ध जोड़ना प्रारम्भ किया। रस की उत्पत्ति श्रोता के चित्त में होती हैं। यह विधान भरत मुनि व उनके बाद के अनेक संगीतशास्त्रियों ने किया हैं। आधुनिक काल में पं0 भातखण्डे ने श्रृंगार, करूण, वीर, व शान्त मात्र ये चार ही रस शास्त्रीय संगीत के विषय में ग्राह्यमाने हैं।

पं0 भातखण्डे जी ने संगीतशास्त्र में बताया है, कि केवल एक ही स्वर से किसी विशेष रस की निष्पत्ति सम्भव नहीं है एक साथ कई स्वरों को मिला कर ही रस की निष्पति होती है। स्वरों का आपसी संवाद, स्वरों की स्थिति, (मन्द्र,मध्य,तार) स्वरों के उच्चारण की गति (द्रुत,मध्य,विलम्बित) स्वरों को अन्य स्वरों का स्पर्श, स्वरों का श्रुत्यन्तर, स्वरों का उच्चारण अर्थात् काकु भेद आदि बातों के कारण भाव वैविध्य सम्भव है।

कलाकार शब्द स्वर,राग इत्यादि साधनों द्वारा ऐसी स्थिति उत्पन्न करता है कि सह्रय के मन में भाव जाग्रत हो जाए। जब भाव निर्विकार हो जाता है, तब उससे रस या आनन्द की निष्पत्ति होती है। भाव का सम्बन्ध मन से है और रस का आत्मा से है।

गायन में स्वर, लय, ताल और शब्द के परस्पर मिलने से ही वास्तविक रस प्रस्फुटित होता है। इनमें से किसी एक के अभाव में रसोंत्पादन में कमी ला सकती है। इसके अतिरिक्त सुरीली आवाज भी रस उत्पन्न करने में सहायक होती है।

आधुनिक गायन पद्धति में ख्याल अधिक प्रचलित है, ख्याल के विभिन्न अंग है, जैसे– आलाप, बोलतान, तान। गुणिजन आलाप को रसानन्द में सबसे ज्यादा समर्थ मानते है। सुगठित व चैनदारी का गम्भीर आलाप बरबस श्रोताओं को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। गमक, खटका, मुर्की, मीडं इत्यादि से अलंकृत आलाप को जब कोई साधक आपके सम्मुख किसी ऐसे राग की अवतारणा कर रहा है, जिससे करूणा फूट पड़ती है कलाकार केवल आलाप कर रहा है, भाषा का आश्रय उसने नहीं लिया है वह अपने स्वर प्रयोग से ऐसी स्थिति ले आता है कि आप सुध बुध खो देते है। स्वरों के द्वारा अभिव्यक्त करूणा का संवाद आपके ह्रदय में स्थित करूणा से होता है।सभी रागों में आलाप करते समय हम गमक मीड़ आदि का प्रयोग एक प्रकार से नहीं कर सकते, क्योंकि रागों की प्रकृति अलग– अलग होती है उसी के अनुसार इनका प्रयोग किया जाना चाहिए। जिस गायक में रागों की प्रकृति के अनुसार आलाप करने की क्षमता नहीं है वह रस उत्पन्न करने में कभी भी सफल नहीं हो सकता।

बोलतान शब्द से स्पष्ट है कि इसमें तान का कुछ प्रयोग अवश्य है इसमें गीत के कुछ शब्दों को अनेक प्रकार के स्वरों से सजाकर गाते हैं। आलाप गायन के बाद गायक बोलतान गाता है। बोल तान प्रारम्भ करते समय गायक को यह ध्यान रखना चाहिए कि आखिर में गाए हुये आलाप से पहले गाए जाने वाले बोलतान का आपस में संबन्ध होना चाहिए जिससे राग में रंजकता बनी रहें। बोलतान में आलाप व तान दोनों का मिश्रण रहता है, इसीलिए यह मन के भाव और बुद्धि दोनों का परिचायक है। आलाप से श्रोतागण रसमग्न और बोलतान से भावमग्न हो जाते हैं।

ख्याल गायन का तीसरा भाग तान है। इसमें स्वरों को विविध प्रकार से अलंकृत कर गाते हैं। इसमें रचनात्मकता होती है, यह बुद्धि प्रधान है। गमक की तान रौद्र और भयानक रस, श्रृंगार और करूण रस के लिए मधुर आवाज और साधारण आवाज से शान्त रस की उत्पत्ति होती है। रसानंद के लिए तान उतने अधिक सफल नही होते जितने की आलाप और बोलतान। तानों में विचित्रता अधिक होती है।

भाषा की अपेक्षा नाद के प्रभाव का क्षेत्र अधिक व्यापक है। भाषा विशेष का मर्मज्ञ व्यक्ति ही काव्य के द्वारा रसास्वाद करता है, परन्तु राग का प्रभाव हर वर्ग के व्यक्ति ही नहीं, पशु–पक्षी पर भी पड़ता है। राग में रंजकता अनिवार्य है। यह रंजन ही रस है, जिसका आस्वाद किया जाता है। इस रंजक स्वर संदर्भ को गीत भी कहा गया है।

रञ्जकः स्वर सन्दर्भो गीतमित्यभिधीयते

पं0 शारंगदेव

राग सह्रदय मानवों को ही नहीं, पशु–पक्षियों को भी आनन्द में सर्वाग मग्न कर देता है। यदि वादक या गायक के ह्रदय में राग गंगा उमड़ रही है और वह व्यर्थ की पेचीदागियों में न पड़कर अपनी कला में स्वयं तन्मय हो गया है, तो वह अन्य सह्रदयों को अवश्य निमग्न कर लेगा।

रागों में प्रयुक्त स्वरों, स्वरों की शुद्ध विकृति स्थिति, अन्तराल गति सप्तक भेद भावानुरूप स्वरोंच्चारण पद्धति आदि कई तत्व है, जो राग का एक निश्चित व्यक्तित्व, एक निश्चित आकार, एक निश्चित भाव रस स्थिर करने में सहायक होते है, उदाहरण – राग बहार, राग जोगिया, राग सोहनी। राग बहार के निरूपण में उत्साही, कूदने, युवा प्रकृति के स्वछन्द पुरूष का दर्शन होता है, राग जोगिया के निरूपण में वेदना, करूणा, सभर स्त्री का चित्रण स्पष्ट है, राग सोहनी कुपित आवेशयुक्त प्रेमकलह से उग्र अन्य सुरत दुःखिता खंडिता की प्रतिमूर्ति है, राग भैरवी के कई संग है कभी यौवनोचित नखरे, कभी करूणा, कभी भक्ति तो कभी वियोग का दर्शन होता है।

जिस प्रकार शब्दों का एक रूप होता है उसी प्रकार गेय स्वरों का एक विशिष्ट रूप होता है। आधारभूत स्वर की अपेक्षा, स्वर विशेष का अन्तर उसके स्वरूप को स्पष्ट करता है। जिस प्रकार वाक्य अंगभूत शब्द वाच्यार्थ के पश्चात् व्यंगार्थ का बोध कराते है उसी प्रकार गेय स्वर सन्दर्भ के अंगभूत स्वर अपने स्वरूप के पश्चात् भाव या रस का बोध कराते है। राग में स्वरों का अपना स्वरूप ही व्यजंना का माध्यम है। उन्हें अपने भावों को व्यक्त करने के लिए शब्दों पर निर्भर नहीं रहना पड़ता है। लेकिन शब्दों की भी महत्ता कम नहीं होती। शब्द भी रसोत्पत्ति में महत्वपूर्ण सहायक होते हैं।

राग रसानुकूल ही गीत के शब्द भी होने आवश्यक हैं। श्रृंगार रस के राग में श्रृंगार रस की कविता हो, तभी रस उत्पन्न हो सकेगा, जैसे ठुमरी श्रृंगार रस प्रधान होती है, उसे अगर राग भैरव में गाया जाए तो उचित नहीं होगा। वस्तुतः उसके लिए चपल प्रकृति का राग उचित होगा जैसे पीलू, खमाज, काफी, भैरवी इत्यादि। वर्तमान समय में लगभग सभी रागों में श्रृंगार रस प्रधान गीत गाए जाते है, यदि थोड़ा विचार किया जाए तो स्पष्ट हो जाएगा कि अधिकतर रागों में एक ही रस के काव्य नहीं गाए जा सकते, क्योंकि प्रत्येक राग की प्रकृति अलग–अलग होती है जैसे राग शंकरा वीर रस का राग है अगर इसमें वीर रस से सम्बन्धित गीत न होकर भक्ति रस का गीत हो तोध इससे राग का स्वरूप ही नष्ट हो जाएगा। रागों के स्वरों के आधार पर उसकी प्रकृति एवम् गायन समय निर्धारित किया गया है।

विलम्बित लय शान्त, गम्भीर रस उत्पन्न करता है मध्य लय श्रृंगार रस और द्रुत लय अद्भुत रस उत्पन्न करता है। शब्द व स्वर के योग से लय के रस में परिवर्तन हो जाता है, परन्तु साधारण नियम यही है। ध्रुपद में गाये जाने वाले ताल जैसे चारताल, सुलताल आदि वीर

तथा शान्त रसोत्पादक है। श्रृंगार रस के लिये कहरवा, दादरा, दीपचन्दी आदि है। वास्तविक रस की उत्पति करने के लिए राग व गीत के शब्दों के बाद ही लय ताल का क्रम आता है।

स्वर जब विभिन्न संदर्भो में, विभिन्न अन्तरालों के साथ नियमों के अन्तर्गत राग रूप में होता है, तब स्वरों द्वारा रसोत्पत्ति होती है। वास्तव में रस तो एक चेतना की अनुभूति है जो काव्य, नाट्य और गीत से स्वतंत्र रूप में प्राप्त हो सकती है। इसलिए श्रीकण्ठ ने कहा है कि ''शुद्ध बुद्ध स्वभाव रस, काव्य, नाट्य और गीत तीनों में निवास करता है।'' आचार्य अभिनव गुप्त का कथन है– विभाव, अनुभाव, संचारी भाव रस निष्पत्ति के हेतु नहीं है, उनके बोध के बिना भी रस की अभिव्यक्ति होती है।'' आचार्य शारंगदेव ने भी गीत, वाद्य और नृत्य को रस प्रधान कहा है।

अध्ययन काउद्देश्य

संगीत से सम्बन्धित यह महत्वपूर्ण विषय है, क्योंकि संगीत की उद्देश्य मनरंजन करना है। प्रारम्भिक कलाकार के लिए यह जानना अत्यन्त आवश्यक है कि सहृदय श्रोताओं को संगीत से आनन्द किन–किन अवयवों से प्राप्त हो रहा है? जिससे कलाकार इन सभी अवयवों का प्रयोग मनोरंजन के लिए सही ढंग से कर सके।

अनेक गुणीजनों ने रागों के रसों पर विचार किया है। यह अत्यन्त गम्भीर व विस्तृत विषय है, इस पर प्राचीनकाल से लेकर अब तक विचार होते चले आ रहे है। प्राचीन संगीत शास्त्रों में तो प्रत्येक स्वर के रंग, रस, स्वभाव, देवता ये सभी अलग–अलग निर्धारित किए गए है। नंवागतुक कलाकारों के मंचन में रसोत्पादक अवयवों की भारी कमी दिखाई देता है। इन्हीं कारणों से इस महत्वपूर्ण विषय को अध्ययन का उद्देश्य बनाई हूँ।

निष्कर्ष

गीत, वाद्य, काव्य के पृथक– पृथक रूप में जिस अलौकिक, अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति होती है, और जो श्रोताओं को तन्मयावस्था प्राप्त कराता है यही सांगीतिक रसोत्पादन के आधारभूत लक्ष्य है। कलाकार के मन में अपने कला के प्रति विशेष भावना होती है, जो अपनी कला के अनुसार उसे भिन्न – भिन्न माध्यम से सहृदय जनों तक पहुँचाकर उन्हें रसानुभूति कराता है और सांगीतिक तत्व इन उद्देश्यों को पूर्ण करते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *पाठक, सुनन्दा, हिन्दुस्तानी संगीत में राग उत्पत्ति एवं विकास ,राधा पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, पेज न0 276,277।*
2. *डॉ0 दीक्षित, प्रदीप, सरस संगीत, पेज न0 72।*
3. *आचार्य बृहस्पति, संगीत चिन्तामणि, प्रथम एव द्वितीय खण्ड ,बृहस्पति पब्लिकेशन्स नई दिल्ली, पेज न0 99।*
4. *गर्ग लक्ष्मी नारायण, संगीत निबन्धावली, संगीत कार्यालय हाथरस पेज न0 126,128,131।*
5. *संगीत कला बिहार, मई 2016, पेज न0 22,।*